IJAER/ September-October 2021 /Volume-10/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

"विदेश नीति–मकसद, महत्व और निर्भरता : नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल के विशेष संदर्भ में"

1. डॉ० अनुजा रानी गर्ग (एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष), शोध निर्देशिका, राजनीति विज्ञान विभाग शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नातकोतर महाविद्यालय, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ०प्र०).

2. राकेश कुमार, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नातकोतर महाविद्यालय, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय , मेरठ (उ०प्र०).

1.1 प्रस्तावना–

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र, भारत विश्व में सुदृढ़ एवं सशक्त विदेश नीति के लिए जाना जाता है। साथ ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुकूल अपना सामंजस्य स्थापित करने में भी भारतीय विदेश नीति के क्षेत्र में कई मुकाम हासिल हुए है और अनेकानेक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा है। भारत की स्वदेश नीति का विश्व व्यवस्था, द्विपीक्षीय तथा बहुक्षेत्रीय सम्बन्धों, नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था आदि के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान है। विदेश नीति के निर्धारण में सबसे ज्यादा प्रभावशाली तत्व, राष्ट्रीय हित कहा जाता है। भारतीय विदेश नीति के आधार एवं स्वरूप के निर्धारण में भी राष्ट्रीय हितों की सर्वाधिक भूमिका है साथ ही हमारे पड़ोसी राष्ट्रों को हमारे सम्बन्ध तथा विश्व व्यवस्था के संचालन में हमारी भूमिका का भी भारतीय विदेश नीति के निर्धारण में प्रमुख योगदान है।

इन सबके अतिरिक्त भारतीय विदेश नीति के निर्धारण एवं क्रियान्वयन पर तत्कालीन नेतृत्व का भी बहुत प्रभाव रहा है। भारत की विदेश नीति के निर्धारण में पं0 जवाहर लाल नेहरू की आमिट छाप है क्योंकि विदेश नीति के सिद्धान्तों का प्रथम तथा निर्धारण उन्होंने ही किया था। वो सिद्धान्त कमोवेश आज भी बने हुए है, परन्तु राष्ट्रीय हितों की आवश्यकतानुसार नवीन सिद्धान्तों ने भारतीय विदेश नीति में अपनी जगह बना ली है। जवाहर लाल नेहरू के समय आदेशों में लिपटी

रही भारतीय विदेश नीति और आदर्शों की खातिर कुछ राष्ट्रीय हितों का त्याग भी हमें करना पड़ा श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति से यथार्थवाद का जामा पहना और राष्ट्रीय हितों की सर्वोच्चता बरकरार रही तथा विश्व के भूगोल को बदलने का महान कृत्य भी अंजाम दिया गया। जनता पार्टी के शासन में मोरार जी देसाई के नेतृत्व में असली गुटनिरपेक्षता पर आधारित यथार्थवादी विदेश नीति हमने अपनाई और 1990 के दशक में विश्व स्तर पर आये अनगिनत परिवर्तनों के फलस्वरूप भारतीय विदेश नीति भी समयानुकूल परिवर्तनों को समावेशित करने में सफल रही।

भारत ने वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की लहर में अपने राष्ट्रीय हितों के अनुकूल आर्थिक सुधारों और उदारीकरण की नीति को अपनाया तथा आर्थिक सम्बन्धों को द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय, सम्बन्धों में सर्वोच्च स्तर पर बनाये रख। इस दौर में विश्व स्तर पर यह नीति प्रचलित थी कि किन्हीं दो या अनेक राष्ट्रों में अन्य सम्बन्धों के न रहते हुए भी आर्थिक सम्बन्ध स्थापित किए जा सकते थे और भारत द्वारा भी उक्त नीति का अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति के लिए पालन किया गया।

अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भारत ने परमाणु क्षमता के क्षेत्र में ऊँची छलांग लगाई और 5 राष्ट्रों की पंक्ति में आ खड़ा हुआ क्योंकि पड़ौसी राष्ट्रों व आस–पास की परिस्थितियों को दृष्टि में रखे हुए आर्थिक हितों से पहले राष्ट्रीय सुरक्षा की महत्ता को समझा एवं तद्नुरूप परमाणु परीक्षण का निर्णय लिया। यू0पी0ए0 के शासन के दौरान मनमोहन सिंह के नेतृत्व में भारत विश्व की सबसे महान तकनीकी शक्ति सम्पन्न राष्ट्र अमेरिका के साथ रिश्ते बनाने में सफल हुआ तथा भारत ने नेतृत्व में हस्ताक्षर किए परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह के साथ परमाणु ऊर्जा के उपयोग व आयात में सफलता प्राप्त की है। सन् 2014 में नरेन्द्र मोदी ने भारतीय नेतृत्व संभाला तो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय विदेश नीति के क्षेत्र में कुछ नवीन वर्ष उत्कृष्ट करने की अपेक्षाएँ की जाने लगी थी क्योंकि नरेन्द्र मोदी यथार्थवादी सोच से सम्पन्न है।

मोदी जी ने सत्ता संभालते ही भारतीय विदेश नीति के स्वरूप में विभिन्न परिवर्तन परिलक्षित होने लगे। इन बदलावों का उद्देश्य है भारत को अभिज्ञात राष्ट्रीय हितों को बचाना और संरक्षित करना। साथ ही भारत की विदेश नीति में अभी तक स्थापित करना। साथ ही भारत की विदेश नीति में अभी तक स्थापित मूल आदर्शों जिन्हें स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के वास्तुकार पंडित जवाहर लाल नेहरू ने परिभाषित किया था, को कायम रखने के बावजूद एशियाई सदी के बहुत बड़े संदर्भ में भारतीय सदीं बनाना भी इन बदलावों का उद्देश्य है। मोदी जी ने विस्तृत कर दिया है। भारत की विदेश नीति ढुलमुल व अस्पष्ट रवैया अतीत की बात हो चुकी है। दिसम्बर 2017 तक नरेन्द्र मोदी छः महाद्वीपों में 50 राष्ट्रों में जाकर 33 विदेश यात्राएँ कर चुके हैं। ये यात्रा नरेन्द्र मोदी की कूटनीति की नई पहल कही जा सकती है।

यद्यपि आज भारत विश्व शान्ति तथा शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की आधारभूत नीतियों में विश्वास करता है परन्तु राष्ट्रीय हितों पर आंच आने पर अन्त नीतियों से इतर भी सोचता है। वैश्विक स्तर की गतिविधियों पर खुलकर अपना पक्ष अभिव्यक्त करता है। नरेन्द्र मोदी का ''मेक–इन–इण्डिया' कार्यक्रम 21वीं सदी, एशिया की सदीं बनाने के क्रम में एक महत्वपूर्ण प्रयत्न कहा जा सकता है। अमेरिका जैसी शक्ति की आज भारत के साथ अच्छे सम्बन्ध रखने को आतुर है, तृतीय विश्व भारत के नेतृत्व को स्वीकार कर रहा है। यह श्रेय भारत की विदेश नीति के निर्माण व संचालन करने वालों को ही जाता है। विदेश नीति का ''मोदी डॉक्ट्रिन'' आज अपनी सफलता की कहानी बयां कर चुका है। इसके तहत भारत ने निर्भीक व स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की क्षमताओं का परिचय दिया है और 21वीं सदी एशिया की होगी, इसे भी सार्थक कर दिया है।

1.1.1 स्वतन्त्रता से पहले भारत की विदेश नीति का निर्माण

यद्यपि स्वतन्त्रता से पहले भारत की विदेश नीति का विकास भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल में ही हुआ, लेकिन इससे पहले भी भारतीय चिन्तन में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व,

अहिंसा जैसे सिद्धान्तों के साथ–साथ कौटिल्य के चिन्तन में कूटनीतिक उपायों का भी वर्णन मिलता है। कुछ विद्वान तो आज भी यह मानते हैं कि विदेश नीति के कुछ उपकरण व साध्य कौटिल्य की ही देन है।

भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल में अंगरेजों ने भारत की विदेश नीति का निर्धारण अपने व्यापारिक हितों की सुरक्षा व उसकी वृद्धि को ध्यान में रखकर किया था। अंग्रेजों ने चीन, अफगानिस्तान तथा तिब्बत को बफर स्टेट माना। उन्होनें चीन में भी विशेष रुचि ली और भारत–चीन सीमा का निर्धारण किया। अंग्रेजों ने नेफा (अरुणाचल प्रदेश) को भारतीय सीमा में ही रखा और भूटान व सिक्किम भारत की विदेश नीति के निर्माण की अवस्था व ऐतिहासिक विकास को विशेष महत्व दिया। उन्होंने अपने व्यापारिक शर्तों के लिए इस क्षेत्र में सुरक्षा का उत्तरदायित्व स्वयं संभाला।

1.1.2 भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन व विदेश नीति

भारत की विदेश नीति के आधानिक सिद्धान्तों का निर्माण भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना होने के बाद ही हुआ। 1885 से ही कांग्रेस ने अंग्रेजों की दमनकारी नीति का विरोध करना शुरु कर दिया और कुछ ऐसे बुनियादी सिद्धान्तों की नींव डाली जो आज भी भारत की विदेश नीति का आधार हैं।

1885 में पारित एक प्रस्ताव द्वारा कांग्रेस ने उत्तरी बर्मा को अपने क्षेत्र में मिला लेने के लिये ब्रिटेन की निन्दा की। इसी तरह 1892 में एक अन्य प्रस्ताव द्वारा भारत ने अपने आपको अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीतियों से स्वयं को स्वतन्त्र बताया। इसी दौरान कांग्रेस ने भारत को बर्मा, अफगानिस्तान, ईरान, तिब्बत आदि निकटवर्ती राज्यों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही हेतु प्रयोग किये जाने पर असंतोष जताया गया। यह भारत की असंलग्नता की नीति की ही पृष्ठभूमि थी। प्रथम विश्वयुद्ध तक कांग्रेस का अंग्रेजों के प्रति दृ ष्टिकोण–असंलग्नता की नीति का पालन अर्थात् ब्रिटिश नीतियों से स्वयं को दूर रखना ही रहा। इस दौरान कांग्रेस ने अंग्रेजों की साम्राज्यवादी व उपनिवेशवादी तथा दक्षिण

अफ्रीका में लाई जा रही रंगभेद की नीति का विरोध किया जो आगे चलकर आधुनिक भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण उद्देश्य व सिद्धान्त बनी।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1921 में कांग्रेस ने घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार की नीतियां भारत की नीतियां नहीं हैं और न ही वे किसी तरह भारत की प्रतिनिधि हो सकती। कांग्रेस ने यह भी घोषणा की कि भारत को अपने पड़ोसी देशों से कोई खतरा व असुरक्षा की भावना नहीं है। इसी कारण 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध में कांग्रेस ने अंग्रेजी हितों के लिए शामिल होने से मना कर दिया था। 1920 में चलाए गए खिलाफत आन्दोलन में भी भारत ने मुसलमानों का साथ दिया जो आज भी भारत की अरब समर्थक विदेश नीति का द्योतक है। भारत ने हमेशा ही अरब–इजराइल संकट में अरबों का ही पक्ष लिया है। इसी दौरान कांग्रेस ने उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद विरोधी सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और उपनिवेशवाद के शिकार देशों के साथ मिलकर अंग्रेजों की नीतियों की निन्दा की।

1.1.3 विदेश नीति – मकसद, महत्व और निर्भरता

विदेश नीति किसी भी देश के लिए बहुत खास मायने रखती है। विदेश नीति के जरिए ही कोई देश किसी दूसरे मुल्क के साथ बेहतर सम्बन्ध बनाकर अपने राष्ट्रीय हितों को हांसिल करता है। विदेश नीति के कुछ मकसद होते हैं जिनमें राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास और विश्व व्यवस्था को बेहतर बनाए रखने जैसे जरूरी लक्ष्य शामिल होते हैं। इसके अलावा किसी भी देश की विदेश नीति उसके अंदरूनी और बाहरी माहौल के आधार पर निर्धारित की जाती है, जिसमें भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक विरासत, व्यक्तित्व, और विचारधाराओं का भी काफी योगदान होता है। साथ ही राजनीतिक जवाबदेही, सामाजिक संरचना और किसी देश के अंतर्राष्ट्रीय संधियों में शामिल होना भी उस देश की विदेश नीति में अहम भूमिका निभाता है।

1.1.4 भारतीय विदेश नीति

भारत में विदेश नीति और कूटनीति की एक लंबी परंपरा रही है। ये प्राचीन काल में शुरू हुई है जो अब तक जारी है। चाणक्य को अक्सर भारतीय कूटनीतिक परंपरा का जनक माना जाता है। औपनिवेशिक काल में, ब्रिटिश भारत ने एक ऐसी नीति अपनाई जो मुख्य रूप से औपनिवेशिक सत्ता के हितों द्वारा तय की गई थी। 15 अगस्त 1947 को आजादी मिलने के बाद विदेश नीति देश के हिसाब से परिभाषित किया गया। विदेश नीति का उदेश्य भारत के हितों की रक्षा करना और उन्हें बढ़ावा देना है। इसके अलावा भारतीय विदेश नीति में पड़ोस में शांति हासिल करना, व्यापार बढ़ाना, विदेशी निवेश आकर्षित करना और वैश्विक क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाने जैसे लक्ष्य भी शामिल है। गौरतलब है कि भारतीय विदेश नीति भारत द्वारा संचालित हैं युगों पुरानी सूक्ति –दुनिया एक परिवार हैश पर आधारित है।

1.1.5 सरकार के पहले कार्यकाल के दौरान भारतीय विदेश नीति (2014 – 2018)

मई 2014 में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की बागडोर संभाली तब उनकी विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य भारत की बेहतर छवि बनाने और भारत को विश्वपटल पर एक उभरती हुई शक्ति के रूप में दिखाने का था जिसके तहत उन्होंने विभिन्न राष्ट्रों की सरकारों के सामने "मेक इन इंडिया" का प्रस्ताव रखा। इसी प्रस्ताव के चलते FDI के नियमों में भी बदलाव किये गए। प्रवासी भारतियों के साथ संबंधों को भी नयी विदेश नीति के तहत ही बढ़ाया गया।

पड़ोस पहले की नीति पर काम करते हुए सरकार ने सार्क देशों को शपथ ग्रहण समारोह में बुलाया था। सरकार ने अपने पहले कार्यकाल के दौरान विकसित विदेश नीतिश के सिद्धांतों पर काम किया है जिससे भारतीय कूटनीति काफी मजबूत हुई है। पुरानी सरकारों द्वारा वैश्विक स्तर पर हल किए मुद्दों को मौजूदा सरकार ने प्राथमिकता देते हुए आगे बढ़ाया है। इन कामों में बांग्लादेश के साथ हुआ भूमि सीमा समझौता और अमेरिका के साथ हुए असैन्य परमाणु समझौते जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल थे। इसके अलावा यूरोपीय देशों और भारत के संबंधों को प्रभावित करने वाले 'इतालवी

मरीन मामले' मामले पर भी मौजूदा सरकार ने जोर दिया। इतालवी मरीन मामले के चलते यूरोप, भारत को मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था MTCR में शामिल होने से रोक रहा था।

कार्यकाल के दौरान जहाँ अफगानिस्तान और श्रीलंका जैसे देशों के साथ भारत के सम्बन्ध बेहतर हुए तो वहीं नेपाल और पाकिस्तान जैसे भारत के पड़ोसी मुल्कों के साथ भारत के सम्बन्ध में तल्खी आई है। पाकिस्तान मामले में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद, पुलवामा हमला और कुलभूषण जाधव जैसे मामले शामिल रहे हैं। नेपाल मामले में देखे तो नेपाल के नए संविधान ने काठमांडू और नई दिल्ली के बीच दरार पैदा कर दी, और मधेसी नाकाबंदी के कारण ये दरार और भी चौड़ी हो गई है। जानकारों के मुताबिक नेपाल अब भारत से दूर जाकर चीन के साथ अपने संबंधों को बढ़ा रहा है।

मॉरीशस और सेशेल्स के द्वीप देशों की यात्रा की जिससे हिंद महासागर क्षेत्र में एक मजबूत नींव बना पड़ी है। 90 के दशक में आई लुक ईस्ट पॉलिसी को बढ़ावा देते हुए NDA सरकार ने एक्ट ईस्ट का नारा दिया जिससे दक्षिण–पूर्व एशिया में भारत की पकड़ पहले से मजूत हुई है। एक्ट ईस्ट दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ व्यापार और निवेश संबंधों को बढ़ाने में भारत की उत्सुकता को दर्शाती है।

1.2 साहित्य समीक्षा–

किसी भी प्रस्तावित शोध के लिए उससे सम्बन्धित पूर्व में किए गए अध्ययनों एवं उपलब्ध साहित्य की समीक्षा उस शोध को सही दिशा–निर्देश प्रदान करने के लिए अति आवश्यक है। इसलिए भी शोध प्रबन्ध की पूर्णता बिना साहित्यिक अवलोकन के अभाव के अकल्पनीय तथा असंभव है। यहाँ पर शोध समस्या से सम्बन्धित कुछ प्रमुख रचनाओं की समीक्षा प्रस्तुत की गई हैं–

शर्मा, गोयल कृष्ण (1991) ने अपनी पुस्तक ''भारतीय विदेश नीति की बदलती अवधारणा'' में सन् 1971 के बाद से भारत की विदेश नीति की बदलती अवधारणा का विवेचना प्रस्तुत किया है तथा भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति को समझाया है।

मिश्रा, राजन कुमार (1996) ने अपनी रचना ''इण्डिया एण्ड इण्टरनेशनल रिलेशन्स'', में भारत के अन्य देशों के साथ जैसे– भारत, चीन, भारत–जापान, भारत व ब्रिटेन, भारत व रूस भारत व अमेरिका एवं यूरोपीय राष्ट्रों के साथ भारत का दृष्टिकोण एवं अन्य देशों के साथ सम्बन्ध तथा उनके प्रति भारत का दृष्टिकोण एवं अन्य देशों का भारत के प्रति दृष्टिकोण व उत्तरोतर बढ़ते हुए सम्बन्धों का प्रतिपादन इस पुस्तक में किया गया है। पुस्तक के बिल क्लिंटन के कार्यकाल में भारत–अमेरिका सम्बन्ध व इस काल में हुए समझौता पर विशेषतया प्रकाश डाला गया है।

जैन, बी0 एम0 (1996) ने अपनी पुस्तक ''प्रमुख देशों की विदेश नीतियों'' में विदेश नीति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, सिद्धान्तों एवं प्रतिरूपों का शीत युद्ध एवं शीत युद्धोत्तर काल के परिपेक्ष्य में उल्लेख किया है। शीत युद्ध की समाप्ति एवं सोवियत संघ के अन्त के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए है जिनके फलस्वरूप पूर्व एवं पश्चिम की महाशक्तियों के बीच प्रतिद्वन्दता का अंत हुआ है जिससे बड़ी शक्तियों की विदेश नीतियों एवं पारस्परिक सम्बन्धों के स्वरूप की अत्यधिक प्रभावित किया है।

उपाध्याय, अर्चना (2005) ने अपनी पुस्तक ''भारतीय विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' में भारतीय विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्रियान्वयन का समावेश किया गया है, भारतीय विदेश नीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि उद्देश्य, विदेश नीति के सिद्धान्त बदलते हुए आयाम तथा विश्वव्यापी राजनीतिक परिवर्तन के बाद भारत–अमेरिका, भारत चीन, भारत–रूस, भारत–जापान, भारत–ब्रिटेन आदि सम्बन्धों का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। परमाणु निःशस्त्रीकरण समस्या, सी0टी0बी0टी0 आतंकवाद की चुनौती जैसी गंभीर समस्याओं के प्रति भारत के दृष्टिकोण दर्शाया गया है। भारतीय विदेश नीति के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करती हुई इस पुस्तक में लेखक ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में आये परिवर्तन एवं चुनौतियों का भी वर्णन किया है।

दीक्षित, जे0एन0 (2007) ने अपनी पुस्तक ''भारत की विदेश नीति और आतंकवाद'' में कश्मीर समस्या के अन्तर्गत भारत–पाक सम्बन्ध तालिबान समस्या, आतंकवाद समस्या, भारत के विदेश सम्बन्ध तालिबान समस्या, आतंकवाद समस्या, भारत के विदेश सम्बन्धों के उभरते आयाम इन सभी बिन्दुओं की विस्तारपूर्वक विवेचना की है तथा इसी परिप्रेक्ष्य में भारत–अमेरिका सम्बन्धों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही लेखक ने कश्मीर के संदर्भ में स्पष्टता डालते हुए भारत–पाक सम्बन्धों की विवेचना भी की है।

यादव, आर0 एस0 (2008) ने अपनी पुस्तक ''भारतीय विदेश नीति'' में भारत की विदेश नीति को आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक रूप से सरल एवं सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है तथा शीत युद्धोत्तर काल में हुए बदलावों पर गहन चर्चा प्रस्तुत की है। पुस्तक में भारत तथा अन्य देशों की विदेश नीतियों का उल्लेख किया गया है। लेखक ने भारत का अन्य देशों के साथ प्रारम्भ में वर्तमान तक के सम्बन्धों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया है।

दत्त, पी0पी0 (2011) ने अपनी पुस्तक ''बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति'' में कारगिल युद्ध के बाद पाकिस्तान के साथ भारत के बदलते सम्बन्धों, नेपाल में राजतंत्र के पतन तथा लोकतंत्र के उदय बांग्लादेश में आतंरिक परिवर्तन तथा भारत के साथ उसके सम्बन्ध रूस, भारत और चीन के बीच त्रिपक्षीय संवाद, ऊर्जा के लिए आपसी होड़, भारत अमेरिका के बीच परमाणु करार, अफगानिस्तान और भारत के बीच बदलते सम्बन्ध, बुश प्रशासन के साथ भारत के परमाणु सम्बन्धों को लेकर चिंता, एशिया–जापान व यूरोपीय समुदाय की बदलती स्थिति के अनुरूप भारत की बदलती विदेश नीति, अफ्रीका से सम्बन्धों की बहाली इत्यादि विषयों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है।

पंत, पुष्पेश (2014) ने अपनी पुस्तक ''21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय संबंध'' में भारत–चीन सम्बन्ध व वर्तमान स्थिति, पाकिस्तान–भारत की विदेश नीति, भारत–रूस सम्बन्धों का विश्लेषण तथा भारत का पड़ोसी देशों के प्रति दोस्ताना व्यवहार का उल्लेख किया गया है तथा विदेश नीति वाले अध्याय में

भारत के विभिन्न देशों के साथ अपेक्षीय सम्बन्धों और इनमें जोड़े गए मुद्दों को पूरी तरह से लेखक के द्वारा समसामयिक बनाने की चेष्ट की गई है।

वैदिक, डॉ0 वेदप्रताप (2017) ने अपनी पुस्तक ''मोदी की विदेश नीति वैदिक की नजर में'' डॉ0 वेदप्रताप वैदिक के ऐसे लेखों का संग्रह है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति पर तत्काल की गई मौलिक टिप्पणियाँ है। इन टिप्पणियों में मोदी की अपूर्व पहले की जीवंत सराहना है, तो अनेक गई कदमों की दो टूक आलोचना भी की गई है। मोदी की विदेश नीति सम्बन्धी आर्थिक–नीतियों पर सुझाव भी है, चेतावनियाँ भी है एवं मार्गदर्शन भी है जो की नरेन्द्र मोदी के विदेशी नीति पर विचारों का विश्लेषण करती है।

1.3 मोदी जी के कार्यकाल में भारतीय विदेश नीति–

मौलिक परिवर्तन देखने में आया है कि वर्षों के पश्चात् भारतीय राजनीति में वर्ष 2014 में पूर्ण बहुमत मिला। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तहत देश की घरेलू नीतियों के साथ–साथ विदेश नीति गतिशील, सकारात्मक और विकास उन्मुख हो गई। उन्होंने समय के विस्तार को फिर से तैयार किया देश की इच्छा ने अपनी गरिमा, आत्मसम्मान, शक्ति का रेखांकन किया तथा दोस्ती और सहकारिता का सन्देश दिया। सरकार में बदलाव के बाद हर देश की विदेश नीति में निरंतरता और परिवर्तन के तत्व होते है। यह उल्लेखनीय है कि शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री के रूप में मोदी खुद ही एक राजनायिक सफलता को और सभी सार्क देशों के प्रमुखों ने मॉरीशस के साथ समारोह में भाग लिया प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की पहल पड़ोसी नीति ने भारत के साथ अपने पड़ोसियों के दृष्टिकोण को बदल दिया है। विदेश नीति में निम्न परिवर्तन और समझौते हुए है जो कि इस प्रकार है–

1.3.1 आर्थिक उद्देश्यों में बदलाव–

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी सरकार की विदेश नीति के आर्थिक और तकनीकी उद्देश्यों को घोषित किया। ताकि उनका आदर्श वाक्य ''भारत प्रथम'' हैं भारत प्रथम का अर्थ है कि

स्वच्छता, खाद्य सुरक्षा, रोजगार सृजन और रक्षा तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जैसी अन्य बुनियादी जरूरतों को अन्य देशों के लिए अधिक स्पष्टतः और विशिष्टता के साथ व्यस्त किया जायेगा।

1.3.2. घरेलू एवं विदेशी नीति के उद्देश्यों के मध्य व्यापक सम्पर्क–

घरेलू नीति और हित, राष्ट्र की विदेश नीति का प्रतिनिधित्व करेंगे। ''मैक इन इण्डिया'' एक मात्र नारा नहीं है बल्कि एक आर्थिक विदेश नीति पहल है। उन्होंने घोषणा की पूरी दुनिया भारत की तरफ देख रही है। जनसांख्यिकी लोकतंत्र और भोग भारत के लिए दुनिया को आकर्षित कर रहे हैं।

1.3.3 राष्ट्रीय शक्ति पर अधिक जोर–

आर्थिक शक्ति और सैन्य शक्ति की मान्यता मोदी की विदेश नीति की पहचान है। प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्रीय हित को प्रमुखता देते हैं, लेकिन सभी सौदों में व्यवहारवाद प्रबल होता है।

1.3.4. सीमा रेखा के साथ चिंता–

मोदी सीमा पर समझौते के खिलाफ चीन दोनों को पहले ही दे दिया गया है। पाकिस्तान से सीमा गोलीबारी बर्दाश्त नहीं की जायेगी। मोदी द्वारा भारतीय सीमा रेखा चीनी घुसपैठ का भी विरोध किया है।

1.3.5. पाकिस्तान उन्मुख विदेश नीति की अस्वीकृति–

भारत पाकिस्तान के साथ दोस्ती की इच्छा करता है लेकिन हमारी चिंता केवल पाकिस्तान ही नहीं है, यह एकमात्र दुश्मन नहीं है। भारत ने पाकिस्तान के साथ समझौते के बिना दोस्ती की पेशकश की। पहली बार भारत ने 'लक्ष्मण रेखा' पर जो दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि दोनों देशों के बीच विश्वास का संबंध दोनों देशों के संबंधों पर किसी भी सार्थक क्षण के लिए पूर्व–अपेक्षित है। भारत में अलगाववादियों के साथ पाक अधिकारियों की बैठक 'लक्ष्मण रेखा' का उल्लंघन थी। जो कि

एक विश्वासघाती कदम था। इसलिए भारत ने पाकिस्तान के साथ सभी वार्ताओं को निलंबित कर दिया।

1.3.6. पुनर्गुटता के लिए गुट–निरपेक्षता–

शीत युद्ध काल के दौरान गुट–निरपेक्षता प्रासंगिक थी। आर्थिक विकास और तकनीकी उन्नति के लिए विश्व शक्ति के साथ भारत की गुटता राष्ट्रीय हित के लिए है। भारत की विदेश नीति अब किसी भी हठधार्मिता पर आधारित नहीं है, बल्कि देश के हित और विश्वास पर आधारित है। गुट–निरपेक्षता को यहाँ मांगने का मतलब राष्ट्रीय हित को प्रस्तुत करना है। यू0एन0एस0आर0 के पतन तक गुट–निरपेक्ष भारत ने वैचारिक लक्ष्य के लिए दूसरे दर्जे पर काम किया था। इस प्रकार नेहरू नीति को नरेन्द्र मोदी ने पूरी तरह से नकार दिया है।

1.3.7. संभावित विरोधियों के साथ आर्थिक सम्बन्ध–

भारत का आर्थिक सम्बन्ध विशेषकर चीन के साथ अपने सुरक्षा संबंधों से स्वतन्त्र है। मोदी ने पहले से ही भारत और विदेशों में तीन बार चीन के राष्ट्रपति सी जिनपिंग से मुलाकात की है। लेकिन सीमा विवाद में भारत के रूख और जापान के साथ भारत की सामाजिक भागीदारी पर कोई समझौता नहीं किया है। पूर्व एशिया के शिखर सम्मेलन में नरेन्द्र मोदी ने दक्षिण चीन सागर में चीन की आक्रामक भूमिका को निशाना बनाने के लिए नये समुद्री मानदण्डों के लिए आह्वान किया। वह जानते है कि चीन केवल ताकत का सम्मान करता है, न कि 'पंचशील सिद्धान्त' का। जब तक एक लोकतांत्रिक प्रणाली चीन में नहीं आती है तब तक विशेष देखभाल की आवश्यकता है।

1.3.8. मोदी की विदेश नीति में पड़ोस को प्राथमिकता–

पद संभालते ही उनकी पहली विदेश यात्रा भूटान की थी। उन्होंने सत्ता संभालते ही सभी आठ पड़ोसियों के साथ द्विपक्षीय वार्ता आयोजित की। उन्होंने नेपाल में काठमाण्डु में 26 और 27 नवम्बर, 2014 को सार्क शिक्षर सम्मेल के दौरान पडोसी देशों के साथ बैठक पर बहुपक्षीय वार्ता की।

1.4 निष्कर्ष और सकारात्मक रिकार्ड–

छह महीनों के भीतर उन्होंने ब्रिक्स, आसियान, पूर्वी एशियाई शिखर सम्मेलन, सार्क, जी–20 और यू0एस0 के साथ उनकी प्रतिनिधियों समेत पांच प्रमुख बहुपक्षीय कार्यक्रमों में भाग लिया। इन सभी शिखर सम्मेलनों में, प्रधानमंत्री मोदी का जोरदार स्वागत किया। उन्हें विश्व स्तर पर नेता के स्तर पर पहुँचा दिया। उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका आस्ट्रेलिया, जर्मनी, चीन, श्रीलंका, बांग्लादेश, जापान, भूटान और नेपाल में मिलने वाले भव्य स्वागत का विशेष उल्लेख करना चाहिए। सात महीनों के भीतर मोदी ने उपरोक्त देशों व महाशक्तियों के साथ द्विपक्षीय वार्ता सम्पन्न की।

नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और व्यक्तिगत की अनूठी शैली ने भारतीय विदेश नीति को एक ताजा दृष्टिकोण और उत्साह प्रदान किया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तन के अनुसार उन्होंने सफलतापूर्वक भारतीय विदेश नीति के मूल सिद्धान्तों को परिवर्तित करने की कोशिश की हैं। प्रधानमंत्री मोदी की विदेश यात्राओं ने दुनिया के प्रमुख देशों के साथ करीबी रिश्ते बनाए है। नई दिल्ली की साख वैश्विक स्तर पर उल्लेखनीय रूप से बढ़ रही है। इसके अलावा निभाने के लिए तैयार होने के साथ एक उभरती वैश्विक शक्त के रूप में भारत की एक नई पहचान बनाई है। हालांकि, उनकी उपलब्धियाँ विदेश नीति के क्षेत्र में सराहनीय है, लेकिन गम्भीर चुनौतियों से निपटना उनके लिए आसान काम नहीं होगा। भारत के पड़ोस में चीन के बढ़ते प्रभाव और इस क्षेत्र में रूस, चीन और पाक जैसे तीन प्रमुख देशों का उभरता हुआ गठबंधन निकट भविष्य में भू–राजनीतिक समीकरण को बदलकर रख देगा और इसलिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तर पर भारत के सामने यह एक बड़ी चुनौती होगी।

इसके अतिरिक्त तीसरे विश्व के लिए अपनी समस्याओं तथा मुद्दों को उठाने के लिए गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एक महत्वपूर्ण मंच है, तथा भारत इस मंच का संस्थापक सदस्य है। अतः मोदी के इस दौर में भारत की विदेश नीति को लेकर कुछ भी कह पाना अभी जल्दबाजी होगी, अभी किसी प्रकार की टिप्पणी करने से पहले इंतजार करना होगा, लेकिन अब तक विदेश नीति के क्षेत्र में

जो पहल की गई है उससे दिखाई देने लगा कि भविष्य में उम्मीद के मुताबिक ही नतीजे निकलेंगे तथा भारत की विदेश नीति का भविष्य बेहद उज्जवल भी होगा।

विदेश नीति के सवाल पर मोदी सरकार का दृष्टिकोण उनके इस बात में छिपा है कि "प्रतिरक्षा एक नाजुक अभ्यास कार्य है, चाहे यह गुट–निरपेक्ष और पूर्व के दौरान किये जाने वाले रणनीतिक स्वायत्तता का सवाल हो या भविष्य की अत्यधिक व्यस्तताएं हों। लेकिन एक बहु–ध्रुवीय विश्व में यह संभव ही नहीं कि किसी से आप मुक्त हो पाएं। इस सन्दर्भ में, इसके पास कई गेदें हैं जिन्हें हवा में उछाल दिया गया है, और उसी समय इस आत्मविश्वास और कौशल को प्रदर्शित करने की आवश्यकता है कि देखो एक भी गेंद गिरने पाई।"

वे जोर देते हैं कि "सच्चाई यह है कि वैश्विक पायदान पर उपर की ओर चढने के लिए बड़ी–बड़ी घोषणाओं की जरूरत पड़ती है, चाहे वह पारंपरिक हो या एकल, राजनीतिक हो या आर्थिक। जरूरी नहीं कि सभी जोखिम नाटकीयता लिए हुए हों, अक्सर सिर्फ विश्वास के साथ जोड़–घटाव और मजबूती से उस काम के दिन प्रति दिन के हिसाब रखने के प्रबंधन से हासिल किया जा सकता है। लेकिन इन सब का समेकित प्रभाव वैश्विक स्थिति निर्धारण में लंबी छलांग के रूप में सामने आता है। जिसे एक हद तक हम आज होते हुए देख सकते हैं।"

और वे बताते चलते हैं कि "आज हम बदलाव के नोक पर खड़े हैं। कहीं अधिक आत्मविश्वास से प्रतीत होता है कि अलग–अलग लक्ष्यों की खोज और विरोधाभासों को दूर करने का प्रयास हो रहा है। उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जोखिम उठाना उसका आंतरिक गुण है। एक राष्ट्र जिसे एक अग्रणी ताकत के रूप में खुद को बनाने की इच्छा बलवती है, वह अनसुलझे सीमा–विवादों, गैर–एकीकृत भौगोलिक क्षेत्रों और कमतर अवसरों के दोहन को जारी रखने वाली नीति को अपनाये नहीं रख सकता। और इन सबसे उपर, स्पष्ट तौर से नजर आ रहे बदलते वैश्विक क्रम में हठधर्मिता

की राह पर नहीं चल सकता है।" इसके माध्यम से जो नजर आता है वह एक व्यावहारिक कठोर निर्णय लेने वाला दृष्टिकोण है, जो हठधर्मिता से परे देखने और समानता की वास्तविक दुनिया में प्रवेश करने की इच्छा को संपन्न करता है। हठधर्मिता, अपनी राय में, अपने और दुनिया के एक लंबे दृ ष्टिकोण के साथ मूल्य–आधारित विदेश नीति के लिए व्यंजना है, और वह इसका उपहास करता है।

हालांकि मूल्य–आधारित विदेश नीति में कुछ भी नया नहीं है जो रूस–भारत– चीन के साथ–साथ जापान–अमेरिका–भारत या शंघाई सहयोग संगठन के साथ चतुर्भुज वार्ता का हिस्सा होने को अस्वीकार करता है। वे सऊदी अरब और ईरान का भी उल्लेख करते हैं, लेकिन यहां गेंद ईरान पर गिर गई है।

हालाँकि, उनका तर्क अभी भी अपना वजूद रखता है, जहाँ तक वह स्वयं मानते हैं कि ज्यादातर देश भी ऐसा ही कुछ कर रहे हैं। जिसका अर्थ यह है कि भारत सहित जल्द या बाद में प्रत्येक देश को भी इसी रास्ते पर चलना होगारू फिर इसके बाद क्या? क्योंकि वास्तविकता स्थायित्व में नहीं बल्कि तरलता में होती है।

उदहारण के लिए सी राजा मोहन हमारा ध्यान, रूस–चीन साझेदारी को भारतीय महासागर तक विस्तार देते हुए उद्धृत करते हैं कि रूस, चीन और दक्षिणी अफ्रीका की नौसेनाओं द्वारा 'मोरिस' नामक एक अभ्यास आयोजित करने के लिए संदर्भित करते हैं। वे इस वास्तविकता को उद्धृत करते हैं कि रूसी नौसैनिक पनडुब्बी ने हाल ही में पश्चिमी देशों से बाहर श्रीलंका के हमबंतोता पोर्ट का दौरा किया है और रुसी परमाणु बमवर्षकों ने दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया है। यह पहली बार है कि दक्षिणी अफ्रीका ने पश्चिम से बाहर जाकर पहुंचने का प्रयास किया है। ईरान ने भी, अरब सागर में रूसी और चीन के साथ नौसैनिक अभ्यास की पेशकश की है।

दूसरे शब्दों में भारत ने, जिसने अपना सारा ध्यान चीन द्वारा पेश की गई चुनौती पर केन्द्रित कर रखा है, जो वह कर नहीं सकता। लेकिन रूस–चीन सैन्य गठबंधन जो क्रमशः एक वैश्विक पदचाप

सुनाई पड़ रही है, से अवश्य चिंतित होना चाहिए, जो खासकर भारतीय महासागर में चिंता पैदा करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक, डॉ0 वेद प्रताप, मोदी की विदेशी नीति वैदिक की नजर में, पब्लिकेशन डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली।
2. पंत, पुष्पेश, 21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, पब्लिकेशन टाटा मेग्राहिल, नई दिल्ली, संस्करण–2014
3. फाईमा, बी0एल0, भारत एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, पब्लिकेशन साहित्य भवन, आगरा, संस्करण–2015
4. वीर, गौतम, महाशक्तियों की विदेश नीति, पब्लिकेशन, मैक मिलन पब्लिशर्स इण्डिया लि0, दिल्ली, संस्करण–2013
5. खन्ना, वी0एस0, अन्तर्राष्ट्रीय विकास, पब्लिकेशन, हाउस प्रा0लि0 नोएडा, नई दिल्ली, पंचम संस्करण–2014
6. पंज, पुष्पेश जैन, श्रीपाल, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त और व्यवहार, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, संस्करण 2014–15
7. जौहरी, जे0सी0, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा राजनीति, स्टलिंग पब्लिशर्स प्रा0 लिमिटेड, संस्करण–2011
8. दत्त, वी0पी0, स्वतन्त्र भारत की विदेश नीति, पब्लिकेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, नेहरू भवन, नई दिल्ली, संस्करण–2011
9. पंत, पुष्पेश, भारत की विदेश नीति, पब्लिकेशन, टाटा मेग्रा हिल, नई दिल्ली, संस्करण–2010
10. वर्ल्ड फोकस, भारत की विदेश नीति, भाग–2, अंक–71, संस्करण–फरवरी, 2018
11. वर्ल्ड फोकस, भारत की विदेश नीति, भाग–1, अंक–70 संस्करण–जनवरी, 2018